सूचीपत्र ।

जनेऊ पद्धति =)॥
मूल शान्ति -)
वासिष्ठी हवन पद्धति ≡)॥
समंत्रक महशांति प्रयोग ॥)
चौबिस गायत्री ।)
पार्थिवपूजा भा० टी० -)
तिथिनिर्णय =)
तर्पण)॥
दशकर्म पद्धति ।=)
प्रेत मञ्जरी मूल ।=)
" " भा० टी० ॥)
पार्वण मूल -)॥

पार्वण भा० टी० =)
अशौचनिर्णय =)
होम पद्धति)॥।
हरवी माह पूजा)॥।
शनिश्चर कथा =)
यजुर्वेदी सन्ध्या भा० टी० -)॥
सिद्धान्त पटल =)
सामवेदी सन्ध्या -)
पिण्ड दर्पण अर्थात् गृह भूषण भा० टी० ॥)
बिवाह पद्धति मूल ≡)
" " भा० टी० =)

श्रीमद्भगवद्गीता भा० टी० दोहा सहित २)
श्रीमद्भगवद्गीता गुटका भा० टी० १)
गीता गुटका १२ पेजी १।)
मुहूर्त मंजरी भा० टी० =)
रत्नोद्योत भा० टी० ≡)
" " सांची ।=)
गर्भ गीता)।
वैद्य रत्न ।=)
गृहभूषण पिण्ड दर्पण ॥।-)
मृत्युका पूर्वरूप)॥

सूचीपत्र ।

अनन्त व्रत कथा भा० टी०	=)॥	सूर्य्य पुराण	=)	श्रीमद्भगवद्गीता	
,, ,, मूल	-)	ऋषिपंचमी व्रत कथा मूल	)॥।	पंचरत्न गुटका	१)
अक्षयनवमी	)॥।	,, ,, भा० टी०	=)॥	तत्त्वबोध ।	।)
गणेश पुराण	-)॥	महाभारत सबलसिंह कृत	४॥)	योगवासिष्ठ	१)
काशी माहात्म्य	)॥।	सूर्य्य पुराण बड़ा साइज	॥)	वेदान्तसार ।	≡)
चित्रगुप्त कथा भा० टी०	=)	पाकेट साइज ,, ,,	-)	नारद गीता ।	-)
प्रेमसागर	२)	गरुड़पुराण भाषा टीका	१)	मौन गीता ।	)॥
बृजविलास	१)	एकादशी माहात्म्य		नित्य कर्म पद्धति	=)
विश्रामसागर	३)	भाषा टीका ,, ,,	१॥)	एकोदिष्ट श्राद्ध मूल	-)॥
सत्यनारायण व्रत कथा मूल	=)	प्रयाग माहात्म्य	=)	,, ,, सटीक	≡)
,, ,, भा० टी०	।)	रामचन्द्र केवट सम्वाद	)॥	गौदान	-)
संकटचतुर्थी मूल	-)	श्रीमद्भगवद्गीता भा० टी०	२)	गणपति पूजा	)॥

करती है और इसलोक में अपने पति के साथ विलास कर पुत्र पौत्रादिकों के संयुक्त रमणीय भोगों को भोग कर पाप से रहित हो अक्षय गति को पाती है ॥ १९ ॥ २० ॥

सर्वपापविनिर्मुक्तास्वर्गलोकेमहीयते ॥ इहलोकेचिरंकालं भर्त्रासहशुचिस्मिता ॥ १९ ॥ पुत्रैःपौत्रैःपरिवृताभुक्त्वाभोगान्मनोहरान् ॥ निष्पापासुभगानित्यंलभतेचाक्षयांगतिम् ॥ २० ॥ इति उद्यापनविधिः समाप्तः ।

बाबू काशीप्रसाद भार्गव द्वारा भार्गवभूषण प्रेस, त्रिलोचन–काशी में
मुद्रित तथा प्रकाशित किया ।

करै ॥ ९ ॥ मध्यान में श्रद्धापूर्वक भक्ति से पूजन करै ॥ १० ॥ कश्यप १ अत्रि २ भरद्वाज ३ विश्वामित्र ४ गौतम ५ जमदग्नि ६ वसिष्ठ ७ साध्वी अरुन्धती ८ इन ऋषियों की प्रतिमा पर

२७ पंचवर्णांचफलपुष्पसमान्वितम् । बध्नीयादुपरिश्रीमत्सभारां न्संविधायच ॥ ९ ॥ मध्यान्हेपूजयेद्भक्त्याऋषीञ्छ्रद्धासमन्वितः॥ कश्यपोत्रिर्भरद्वाजोविश्वामित्रोथगौतमः॥१०॥ जमदग्निर्वसिष्ठश्चसाध्वीचैवाप्यरुन्धती ॥ मन्त्रेणानेनराजेन्द्रकृत्वापूजांसमाहितः॥११॥रात्रौजागरणंकुर्यात्पुराणश्रवणादि २७

आवाहन पूजन करै ॥ ११ ॥ रात्रिमें जागरण करै ॥ अच्छे २ पुराणों को सुनै फिर प्रातःकाल

स्नान करके तिल घृत का हवन करे ॥ १२ ॥ १ हजार आठ अथवा १ सौ ८ आहुति दे ॥ १३ ॥ फिर व्रत करनेवाले अपने गुरु की पूजा करके वस्त्र आभूषण दे सुन्दर पक्वान्न

भिः॥कृतनित्यक्रियःप्रातर्जुहुयात्तिलसर्पिषा॥१२॥ वैदिकोवा थपौराणंअधिकारान्मनुस्मृतः ॥ अष्टोत्तरसहस्रंवाशतमष्टो त्तरंतुवा ॥ १३ ॥ पुनःपूजांततःकृत्वागुरुंसंपूजयेव्रती ॥ स्वर्णाङ्गुलीयवासोभिःकुण्डलामृतभोजनैः ॥ १४ ॥ दद्या देकांसवत्सांचगुरवेगांपयस्विनीम् ॥ पूजयेदृत्विजःसप्तवासो

ब्राह्मणको भोजन करावै ॥ १४॥ एक दुधार गौ आचार्य को दे और होम करनेवालों को वस्त्र

करै ॥ ९ ॥ मध्यान में श्रद्धापूर्वक भक्ति से पूजन करै ॥ १० ॥ कश्यप १ अत्रि २ भरद्वाज ३ विश्वामित्र ४ गौतम ५ जमदग्नि ६ वसिष्ठ ७ साध्वी अरुन्धती ८ इन ऋषियों की प्रतिमा पर

पंचवर्णांचफलपुष्पसमन्वितम् । बध्नीयादुपरिश्रीमत्सभारां न्संविधायच ॥ ९ ॥ मध्यान्हेपूजयेद्भक्त्याऋषीञ्छ्रद्धासमन्वितः॥ कश्यपोत्रिर्भरद्वाजोविश्वामित्रोथगौतमः॥१०॥ जमदग्निर्वसिष्ठश्चसाध्वीचैवाप्यरुन्धती ॥ मन्त्रेणानेनराजेन्द्रकृत्वापूजांसमाहितः॥११॥ रात्रौजागरणंकुर्यात्पुराणश्रवणादि

आवाहन पूजन करै ॥ ११ ॥ रात्रिमें जागरण करै ॥ अच्छे २ पुराणों को सुनै फिर प्रातःकाल

पूर्णपात्र कलश पर धरै ॥ ६ ॥ उसके ऊपर अष्टदल कंकुम अबीरसे बनाव उस पर स्वर्ण प्रतिमा ऋषियों की रक्खे ॥ ७ ॥ एक पल प्रणाम की प्रतिमा अथवा आधा वा चौथाई पल शक्ति

नवा ॥ वंशमृन्मयपात्रेणयवचूर्णनचैवाहि ॥ ६ ॥ आच्छादयेत्तंचैलेनालिखेदष्टदलंततः ॥ सौवर्ण्यःप्रतिमाकार्याऋषीणांभावितात्मनाम् ॥७॥ पलेनवातदर्धेनतदर्धार्धेनवापुनः ॥ शक्त्यावाकारयेत्तत्रचित्तशाठ्यविवर्जितः ॥ ८ ॥ वितान

के अनुसार बनाव ॥ ८ ॥ पांच रंग का चंदवा मंडप में बांध के तोरण आदि से सुशोभित

अ० करै ॥ ३ ॥ घर में गोबर से लीप के सर्वतो भद्र मंडल बनवै उस पर ताम्र अथवा पं०
मट्टी के अच्छे कलश में जल पूरित रखैं ॥ ४ ॥ कलश के कंठ में सफेद वस्त्र
२६ क्त्यासमान्वितः ॥ ३ ॥ शुचौदेशेसमालिप्यसर्वतोभद्रम-
ण्डले ॥ अव्रणंसजलंकुम्भंताम्रंमृन्मयमेववा ॥ ४ ॥ सं
स्थाप्यवस्त्रसंवीतकण्ठदेशेसुशोभनम् । पञ्चरत्नसमायुक्तैः
फलगन्धाक्षतैर्युतम् ॥५॥ साहिरण्योसमाच्छाद्यताम्रेणपटले २६
लपेटे और उसके भीतर पंचरत्न तथा सर्वौषध्यादि छोड़ ॥ ५ ॥ फिर जव भर के १

उसको सुमति ने किस विधि से किया था सो भी कहिये ॥१॥ तब श्रीकृष्ण भगवान् बोले कि पहिले दिन १ वखत भोजन करे दूसरे दिन स्नान करके गुरु के घर जाय ॥ २ ॥ और गुरु से

पूर्णफलप्रदम् ॥ सुमतिकेंनविधिनाचकारवेदतत्वतः ॥ १ ॥
श्रीकृष्णउवाच ॥ पूर्वस्मिन्दिवसेकुर्यादेकभुक्तंसमाहितः ॥
प्रातरुत्थायसुस्नातस्ततोगुरुगृहंव्रजेत् ॥ २ ॥ प्रार्थयेत्तम-
माचार्योभवोद्यापनकर्मणि ॥ पूर्वोक्तेनैवविधिनास्नात्वाभ

प्रार्थना करे कि आप आचार्य होकर उद्यापन विधि से कराइये फिर विधि के अनुसार स्नान

धन यश स्वर्ग तथा पुत्रादि सुख को देने वाला है। इसकी कथा सुनने से पाठ करने से प्राणी मात्र का कल्याण होता है ॥ ७२ ॥ इति भविष्योत्तरपुराणोक्त ऋषिपंचमीव्रतकथाभाषा

धन्यंयशस्यंस्वर्ग्यंचपुत्रदंवैयुधिष्ठिर ॥ पठतांशृण्वतांचापि सर्वपापप्रणाशनम ॥ ७२ ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे ऋषिपंचमीव्रतकथासंपूर्णम् ॥

अथोद्यापनम् ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ किमस्योद्यापनंप्रोक्तंव्रत

टीकासम्पूर्णम् ॥

अथ उद्यापनविधिः। युधिष्ठिर बोले कि पंचमीके व्रतका पूर्ण फल देनेवाला उद्यापन क्या है

पंचमी के व्रत से प्राप्त होता है ॥ ६९ ॥ जो स्त्री इस व्रत को विधिवत् करती है वह अनेक सुख भोगकर पुत्र एवं पौत्र से सम्पन्न होती है ॥७०॥ इस लोक में सुख भोग करके उत्तम गति को

चारणात् ॥ ६९ ॥ कुरुतेयाव्रतंनारीसाभवेत्सुखभागिनी ॥
पलावण्ययुक्ताचपुत्रपौत्रादिसंयुता ॥ ७० ॥ इहलोके
दैवस्यात्परत्रेचपरांगतिम् । एतत्तेकथितंराजन्व्रतानामुत्त-
मंव्रतम् ॥ ७१ ॥ सर्वसम्पत्प्रदंचैवनारीणांपापनाशनम् ॥

प्राप्त होती है । हे युधिष्ठिर इस प्रकार ऋषिपंचमी व्रत तुमसे कहा ॥ ७१ ॥ यह स्त्रियों का सुख तथा संपति, एवंपुत्रपौत्रादि को देनेवाला और संपूर्ण पापों को नाश करनेवाला है, यह व्रत

 इस व्रत के प्रभाव से प्राणी का स्वर्ग में वास होता है। मन वाणी का किया जो पाप

 स्वर्गप्राप्तोमहाराज व्रतस्यास्यप्रभावतः॥कायिकंवाचिकंवापि मानसंयच्चदुष्कृतम् ॥६७॥ तत्सर्वंविलयंयांति व्रतस्यास्य प्रभावतः॥तस्ययज्जायतेपुण्यं तच्छृणुष्वनृपोत्तम ॥६८॥सर्व व्रतेषुयत्पुण्यं सर्वतीर्थेषुयत्फलम् ॥ सर्वदानेषुदत्तेषुतदेतद्व्रत

होता है ॥६७। वह सब नाश होता है। हे युधिष्ठिर ! इस व्रत से जो बड़ा पुण्य होता है उसका फल सुनो ॥ ६८ ॥ संपूर्ण तीर्थ का फल संपूर्ण दान का फल संपूर्ण व्रतो का फल केवल इस

नाश करनेवाले ऋषिपञ्चमी के व्रत को यथोक्त प्रकार से करके सुमति ने उसका फल अपने माता पिता को दिया ॥ ६४ ॥ हे धर्मराज इस व्रत के पुण्यसे सुमति के माता पिता

शनम् ॥ कृत्वासर्वंयथोक्तंच मातापित्रोः फलंददौ ॥ ६४ ॥
व्रतपुण्यप्रभावेण मातातस्यश्वयोनितः॥ मुक्तानृपतिशार्दूल
विमानवरसंस्थिता ॥६५॥ दिव्याम्बरधराभूत्वा गता स्वर्गं च
भारत ॥ पितापिसमृतोमुक्तः सुमतेः पशुयोनितः ॥६६॥

पशुयोनि से मुक्त होकर विमान पर बैठ के स्वर्ग को जाते भये। हे युधिष्ठिर सुन्दर दिव्य रूप वस्त्र धारण किये लोकमें यश छोड़ कर ब्राह्मण और ब्राह्मणी स्वर्ग को गये ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

६१ ॥ हे सुमते इस प्रकार ऋषिपंचमी का व्रत करने से रजस्वला संपर्क जन्य दोष नाश होताहै इसमें सन्देह नहीं है ॥६२॥ परमातमा कृष्ण बोले कि ऋषियों के वाक्य को सुनके सुमति अपने

वाप्यरुन्धती ॥ मंत्रेणानेनसप्तर्षीन्पूजयेत्सुसमाहितः ॥६१॥ व्रतेनऋषिपंचम्याःकृतेनैवाद्विजोत्तम ॥ ऋतुसंपर्कजोदोषः क्षयंयाति न संशयः ॥६२॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ तच्छुत्वा सुमतिर्वाक्यं परमंऋषिभाषितम् ॥ गृहमेत्यव्रतंचक्रे सभार्यः श्रद्धयान्वितः ॥ ६३ ॥ व्रतंतुऋषिपञ्चम्याः सर्वपापप्रणा

घर आकर के स्त्री समेत श्रद्धा पूर्वक उत्तम व्रत को करने लगे ॥ ६३ ॥ सम्पूर्ण पापों को

आंवला आदि से केशको शुद्ध कर स्नान करके स्वच्छवस्त्र धारण कर ॥ ५६ ॥५७॥५८॥५९॥

ष्ठीवनायचगात्राणंकुर्वेहं दन्ताधावनम्॥अनेनदन्तान्संशोध्य स्नायान्मृत्स्नानपूर्वकम्॥५८॥तिलामलककल्केनकेशान्संशो ध्ययत्नतः। परिधायनवेशुद्धे वाससीचसमाहितः॥५९॥पूज- यस्वऋषीन्दिव्यानरुन्धत्या समन्वितान् ॥कश्यपोत्रिर्भरद्वा जोविश्वामित्रोथगौतमः ॥६०॥जमदग्निर्वसिष्ठश्चसाध्वीचै

अरुन्धती सहित सप्तऋषिका पूजन करे ॥ कश्यप १ अत्रि २ भरद्वाज ३ विश्वामित्र ४ गौतम ५ जमदग्नि ६ वसिष्ठ ७ अरुन्धति ८ इन आठो का एकाग्र चित्त से पूजन करो ॥ ६० ॥

भोजन व्रत में करो ॥५३॥ अथवा कन्द मूल फल खाकर भाद्र शुक्ल पंचमी का व्रत करो ॥५४॥

पदेमासि शुक्लपक्षस्यपञ्चमीम् ॥५४॥ तस्यांमध्यान्हसमये नद्यादौविमलेजले॥ कृत्वापामार्गसमिधा दन्तधावनमादितः॥५५॥ आयुर्बलंयशोवर्चःप्रजापशुवसूनिचाब्रह्मप्रज्ञांचमेधांचत्वन्नोदेहिवनस्पते॥५६॥संप्रार्थ्यानेनमन्त्रेण कुर्याद्वै दन्तधावनम्। मुखदुर्गन्धिनाशायदन्तानांचविशुद्धये॥५७॥

मध्यान्हकाल में नदी के तटपर जाकर आयुर्बलं० इस मंत्र से चिचिड़ा की१०८दतुअन करके॥५५।

और पिता भी उसी के पाप से बैलयोनि को प्राप्त भये इनके मुक्ति के लिये ऋषिपंचमी का

बलीवर्दोबभूवह ॥ एतयोर्मुक्तिकामार्थं कुरुष्वऋषिपंच ॥५१॥ भार्ययासहविप्रेन्द्रऋषीन्संपूज्ययत्नतः ॥ आचरस्व व्रतंतत्रसप्तवर्षंद्विजोत्तम ॥५२॥ अन्तेचोद्यापनंकुर्याद्वि शाठ्यंविवर्जितः ॥ शाकाहारस्तुकर्तव्योनीवारैःश्यामकैस्त था ॥५३॥ कन्दैर्वाथफलैर्मूलैर्हल‌कृष्टंनभक्षयेत् ॥ प्राप्यभ

व्रत करो ॥ ५१ ॥ अरुन्धती सहित सप्तऋषि का सात वर्ष पर्यन्त स्त्री सहित पूजन करो ॥५२॥ बाद उद्यापन करो । सौंवाँ (तिन्नी) का चावल बिना जोते बोए जो वस्तु उत्पन्न होती हो उसका

के त्रिकालज्ञ ऋषि बोले ॥ ४८॥ तब सुमति से उसके माता पिता की मुक्ती के लिये यह बचन

स्तस्यसुमतेर्दुःखितस्य च ॥ ऋषिःसर्वतपानाम सर्वज्ञःकरु
णान्वितः ॥ ४८ ॥ सुमतिंप्रत्युवाचेदं तत्पित्रोर्मुक्तये तदा
॥ ऋषिरुवाच ॥ तव माता पुराविप्र स्वगृहे बालभावतः ।
॥ ४६ ॥ प्राप्तंऋतुंविदित्वातु संपर्कमकरोद्द्विज ॥ तेनकर्म
विपाकेन शुनियोनिमुपागता ॥ ५० ॥ पितापिस्पर्शदोषेण

बोले, ऋषि बोले कि हे विप्र ! तेरी माता ने पूर्वजन्म में अपने घर में अज्ञानता से ॥ ४६ ॥ मासिकधर्म होने पर स्पर्शास्पर्श का विचार नहीं किया उसी दुष्कर्म से वह कुतिया भई ॥५०॥

वन में तेजपुञ्ज सप्तऋषियों का दर्शन भया ॥ ४५ ॥ उनको नमस्कार करके कहा कि हे तेजो-
राशि ऋषि लोग हमारे दुःख को एकाग्र होकर सुन उसके उद्धार का उपाय हो सो कहो ॥४६॥

**प्रणिपत्याब्रवीद्वाक्यं हितंचैवतदातयोः ॥ सुमतिरुवाच॥कथ
यध्वंविप्रवर्याः प्रश्नमेकंसमाहिताः ॥ ४६ ॥ केनकर्मविपा
केन पितरौ मे तपोधनाः ॥ इमामवस्थां संप्राप्तौ मोक्ष्यते
पातकात्कथम् ॥ ४७ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ तदाकर्ण्य वच**

हे तपोधन किस पाप के कारण मेरे माता पिता पशुजन्म को प्राप्त भये और अब उनका उद्धार किस
उपाय से होगा सो कहिये ॥४७॥ श्रीकृष्ण धर्मराज से बोले कि सुमति का ऐसा दीन बचन सुन

सुनकर ॥ ४२ ॥ यह मान लिया कि हमारे यही माता पिता हैं तब उनको उसी समय भोजन

ऋ० विदित्वातु दत्तवान्सुमतिस्तदा ॥ तस्यां रजन्यां तत्कालं पं०
२० ददौ ताभ्यां च भोजनम् ॥ ४३ ॥ तदाऽसौ दुःखितः पुत्रो
ज्ञात्वाऽवस्थांतथातयोः ॥ मातापित्रोऽस्तुराजेन्द्र द्रुतंसंप्र
स्थितोवनम् ॥४४॥ ज्ञातुमिच्छामिवैकष्टमितिनिश्चित्यभार
त ॥ तत्रगत्वाज्ञानवृद्धान्ऋषीन्परमधार्मिकान् ॥ ४५ ॥

कराया ॥ ४३ ॥ और अत्यन्त दुखी हुए और मन में संकल्प किया कि बिना माता पिता २०
का उद्धार किये अन्न न खायंगे ऐसा बिचार तत्काल बन को चले गये ॥ ४४ ॥ हे युधिष्ठिर

जन्म लेकर हमको भी बोझा ढोना पड़ता है हम भी अशक्त हैं क्योंकि आज हमारा भी दिन

ह्यशक्तोऽहं भारवाहत्वमागतः । अद्याहमात्मनः क्षेत्रवाहितः सकलंदिनम् ॥ ४० ॥ मारितश्चात्मजेनाहं मुखंबद्ध्वा बुभुक्षितः ॥ वृथाश्राद्धंकृतंतेन जाताऽद्यममकष्टता ॥ ४१ ॥ कृष्णउवाच । तयोःसंवदतोरेवं मातापित्रोश्चभारत ॥ श्रुत्वा पुत्रस्तथावाक्यं यदुक्तं च तदोभयोः ॥ ४२ ॥ पितरौतौ

भर मुख बांध करके मार मार के दिन भर हर में जोता है इसने वृथा श्राद्ध किया ॥४०॥४१॥ श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे युधिष्ठिर सुमति ने अपने माता पिता का परस्पर यह बातें करते हुये

केवल इतना ही है कि पक्वान्न जो ब्राह्मण भोजन के लिये रखा था उसमें सर्प ने
दिया। यह देख के उससे न बचाती तो ब्रह्महत्या होती इससे जाकर छू दिया तब हमारी पतोहू ने

द्गरलंसर्पसंभवम् ॥ ३७ ॥ मयाविचिन्त्यमनसा मरिष्य
न्तिद्विजोत्तमाः ॥ संस्पृष्टंपायसंगत्वा वध्वाऽहंताडिता
शम् ॥ ३८ ॥ दुःखितंतेनमेगात्रं कटिभग्नाकरोमिकिम् ॥
ततःप्राहसचानड्वान् भद्रेतेपापसंग्रहात् ॥३९॥ किंकरोमि

जलती लकड़ी से मारा। ३७॥३८॥ इससे हमारे शरीर में बड़ी पीड़ा है। कुतिया के यह बचन
सुन के बैल बोला कि यह पूर्वजन्म के पाप से दुःख होता है। ३९॥ देख तेरे पाप से ही बैल का

जब अर्धरात्रि का समय आया तब कुतिया क्षुधा के मारे दुखी हो ॥ ३४ ॥ बैलरूपी पति के

ततोरात्र्यांप्रवृत्तायां सशुनीक्षुधिताभृशम् ॥ ३४ ॥ बलीवर्दमुपागत्य भर्तारमिदमब्रवीत् ॥ बुभुक्षितोऽद्यहंभर्तर्नदत्तं भोजनादिकम् ॥ ३५ ॥ ग्रासादिकंचनप्राप्तंक्षुधामांबाधतेभृशम् ॥ अन्यस्मिन्दिवसेपुत्रो ममलेह्यंददात्यसौ ॥ ३६ ॥ अद्यमह्यंकिमप्येष उच्छिष्टमपिनोददौ ॥ पायसोनिपपात

पास जाकर कहने लगी कि हे नाथ आज मैं भूखी कलपरही हूं आज हमको जूठा तक नहीं मिला मेरा पुत्र और दिन तो ग्रासादि देता था ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ आज वह भी नहीं दिया। हमारा दोष

के खाने से ब्राह्मण मर जायंगे और हत्या होगी ऐसा विचार के छू दिया॥३१॥ चन्द्रावती ने यह देख उस कुतिया को जलती हुई लकड़ी से मारा कि उसकी कमर टूट गई। फिर चन्द्रावती ने भोजन की

द्विजभार्याचतां दृष्ट्वाउल्मुकेन जघानह ॥ भाण्डादीनिच
प्रक्षाल्यत्यक्त्वापाकं सुमध्यमा ॥ ३२ ॥पुनःपाकंचकृत्वातु
श्राद्धंकृत्वाविधानतः ॥ ततोभुक्तेषुविप्रेषु नोच्छिष्टंचददौबहिः
॥ ३३ ॥ भूमौक्षिप्तंतयाशून्या उपवासस्तदाऽभवत् ॥

सामग्री शुद्धता से बनाया। ३२॥ सुमतीजी ने विधिवत् श्राद्ध करके ब्राह्मणों को भोजन कराया तब चन्द्रावती ने क्रोध करके ब्राह्मणों का जूठा उस रोज कुतिया को नहीं दिया ॥ ३३ ॥ फिर

का दिन पड़ा ॥ २८ ॥ उस दिन अपनी चन्द्रावती स्त्री से उसने कहा कि हे प्रिये आज हमारे पिता की श्राद्धतिथि है ॥ २६ ॥ आज ब्राह्मणों को भोजन कराना है सो तू अच्छा २

वत्सरादिनं पितुर्मेचारुहासिनी ॥ २९ ॥ भोजनीयाद्विजाभी रुपाकसिद्धिर्विधीयताम ॥ तयाकृतापाकसिद्धिः सुमतेर्भर्तु राज्ञया ॥ ३० ॥ मुक्तंपायसभाण्डेवैसर्पेणगरलंततः । दृष्ट्वा ब्रह्मवधाद्भीताशुनीभाराडानिसाऽस्पृशत् ॥ ३१ ॥

पकवान बना । सुमती की आज्ञा पाकर चन्द्रावती ने सुन्दर पक्वान्न तैयार किया ॥ ३० ॥ उसी समय जो खीर पात्र में रखी थी उसमें ऊपर से सर्प ने विष उगल दिया तब कुतिया ने देखा कि इस

का भया । हे युधिष्ठिर । इस प्रकार वे दोनों अपने कर्म के वश हुए ॥२० ऋतुसंपर्क दोष से पशु-
योनि भोगते भये। परन्तु उन दोनों को अपने पूर्वजन्म का वृत्त और जाति का स्मरण था ॥२६॥ हे

तथा ॥२६॥ सुतस्यैवगृहेराजन्स्मरन्तौ पूर्वपा.कम् । सुमि
त्रस्यच पुत्रोऽभूद् गुरुशुश्रूषणेरत:॥२७॥सुमतिर्नामधर्मज्ञो
देवतातिथिपूजक: ।अथक्षयाहे संप्राप्ते पितुस्तु सुमतिस्तदा
॥२८॥ भार्याचन्द्रवतींप्राह सुमति:श्रद्धयान्वित: । अद्यसां

राजन् ! वे दोनों अपने ही पुत्र के घर अपने पूर्वजन्म का स्मरण करते हुए जीवन बिताने लगे।
सुमित्र का पुत्र जिसका नाम सुमती था वह अपने गुरु की सेवा में रहता था ॥ २७ ॥ सुमति
देवता का पूजन और अतिथि का सत्कार करने वाला था। उसके पिता का क्षयाह (वार्षिक) श्राद्ध

जयश्री और सुमित्र की मृत्यु भई ॥ २२ ॥ तब हे युधिष्ठिर वह ब्राह्मण और ब्राह्मणी दोनों मरने

दंपतीराजन्स्वकर्मवशगौतदा ॥ २३ ॥ भार्यातस्य जयश्रीः साऋतुसंपर्कदोषतः ॥ शुनियोनिमनुप्राप्ता सुमित्रोऽपिनरेश्वर ॥ २४ ॥ तस्याः संपर्कदोषेण बलीवर्दोबभूवह ॥ एवं तौ दम्पतीराजन्स्वकर्मवशगौतदा ॥ २५ ॥ ऋतुसंपर्कदोषेण तिर्यग्योनिमुपागतौ । स्वधर्माचरणाज्जातावुभौ जातिस्मरौ

पर ऋतुसंपर्कदोष से अपने कर्मों के वश हो फिर जन्मे ॥२३॥ और ऋतुसंपर्क से दूसरे जन्म में जयश्री का कुतिया का जन्म भया और सुमित्र अर्थात् उसके पति का ॥ २४॥ दूसरा जन्म बैल

एक समय वर्षा समय में गृहस्थी का काम अधिक करके थकी हुई वह चंचल मन वाली ॥२०॥

क्षेत्रादिषुरतासाध्वी व्याकुलीकृतमानसा ॥ २० ॥ एकदा
सात्मनः प्राप्तमृतुकालं व्यलोकयत् । रजस्वलाऽपिसाराज
न्गृहकर्म चकारह ॥ २१ ॥ भाण्डादीन्यस्पृशद्राजन्नृतौ
प्राप्तेपिभामिनी । कालेनबहुनासाध्वीपञ्चत्वमगमत्तादा
॥२२ ॥ तस्याभर्तापि विप्रोऽसौकालधर्ममुपेयिवान् । एवंतौ

उसी समय ऋतुवती हुई। वह ऋतु प्राप्त होने पर भी अपने घर का सब काम किया करती थी ॥२१॥
हे राजन्! ऋतुकाल प्राप्त होने पर भी उसने भाण्डादिकों को स्पर्श किया। बहुत दिन बाद

करता था। उसके देश में वेद और वेदाङ्गों में प्रवीण सुमित्र नामक एक ब्राह्मण वास करता था ॥१७॥ हे

राजर्षिश्चतुर्वर्णानुपालकः। तस्यदेशेऽवसाद्विप्रो वेदवेदाङ्ग पारगः ॥ १७ ॥ सुमित्रोनामराजेन्द्र सर्वभूतहितेरतः। कृषि वृत्या सदायुक्तः कुटुंबपरिपालकः ॥ १८ ॥ तस्य भार्यासु साध्वीच्च पतिशुश्रूषणेरता । जयश्रीनामाविख्याता बहुभृत्य सुहृज्जना॥ १६॥अतिचिंतान्विता साचप्रावृट्काले सुमध्यमा

राजन् सुमित्र ब्राह्मण अपने सब प्राणियों के सुखार्थ खेती आदि में लगा रहता था, कुटुम्ब पालन करता था ॥१८॥ उसकी स्त्री जयश्री नामा बड़ी पतिव्रता थी किन्तु घरमें धनादि से दुखी थी. १६॥

चाण्डाली, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी, तीसरे दिन धोबिन के समान और चौथे दिन शुद्ध होती हैं ॥१३॥ जान के अथवा अजान से स्पर्शास्पर्श का जो पाप है सो ऋषिपंचमी का व्रत करने से छूट

पसत्त्यार्थं वैकार्येयं ऋषिपंचमी ॥ १४ ॥ सर्वपापप्रशमनी सर्वोपद्रवनाशिनी । ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रैः स्त्रीभिः कार्या विशेषतः ॥१५॥ अत्रार्थे यत्पुरावृत्तं प्रवक्ष्यामि कथानकम् पुराकृतयुगे राजाविदर्भायां बभूवह ॥१६॥ श्येनाजिन्नाम

जाता है ॥ १४ ॥ संपूर्ण पापों को दूर करने वाला और सब उपद्रव का नाश करने वाला ऋषिपंचमी का व्रत चारों वर्ण की स्त्रियाँ करें ॥ १५ ॥ इसकी एक कथा सतयुग की यह है कि विदर्भ देश में एक राजा था ॥ १६ ॥ उसका नाम श्येनजित नाम राजर्षि था वह चारों वर्ण का पालन

जगह बांट दिया ॥ १० ॥ पहिला भाग अग्नि की पहिली ज्वाला में, दूसरा नदी के पहिले बाढ़ में, तीसरा भाग पर्वत में और चौथा भाग स्त्रियों के रजोधर्म में छोड़ दिया ॥११॥ इससे चारो

प्रथमोदके। पर्वतेषुच राजेन्द्र नारीरजासिपार्थिव ॥ ११ ॥ अतोरजस्वलानारी प्रोत्सार्याचप्रयत्नतः । ब्रह्मणः शासनात्पार्थ चातुर्वर्ण्येन सर्वदा ॥ १२ ॥ प्रथमेहनिचाण्डाली द्वितीयेब्रह्मघातकी। तृतीये रजकीप्रोक्ता चतुर्थेहनिशुध्यति ॥ १३ ॥ अज्ञानाज्ज्ञानतोवापि जातं संपर्कपातकम् ।तत्पा

वर्ण की रजस्वला स्त्री को छूने को ब्रह्माजी ने मना किया है ॥१२॥ रजस्वला स्त्री पहिले दिन

समय में वृत्रासुर राक्षस का जब इन्द्र ने वध किया तब उसे ब्रह्महत्या लगी ॥७॥ हे युधिष्ठिर उस हत्या से दुखी होकर राजा इन्द्र ब्रह्मा के पास गये और अपनी हत्या छुड़ाने की प्रार्थना

तयावैराजशार्दूलब्रीडितो वृत्रसूदनः। ब्रह्माणंसमुपागच्छदात्मनः शुद्धिकारणात् ॥ ८ ॥ ततोदेवैः समं ब्रह्माक्षणांध्यानं चकारवै । शुद्धिंशक्रस्यराजेन्द्र प्रहृष्टेनान्तरात्मना ॥९॥ विभज्यब्रह्महत्यांतु चतुर्धाच चतुर्मुखः ॥ प्राक्षिपद्राजशार्दूलचतुःस्थानेषु वैतदा॥ १० ॥ वन्हौप्रथमज्वालासु नदीषु

किया ॥ ८ ॥ तब ब्रह्माजी ने ध्यान कर देखा और बिचार किया कि देवेन्द्र की शुद्धि कैसे होनी चाहिये ॥ ९ ॥ ऐसा बिचार करके ब्रह्महत्या का चार भाग कर दिया और उसको चार

के पापकर्म बन पड़ते हैं ऋषिपंचमी व्रत करने से किस प्रकार के पाप से स्त्रियां छूटती हैं ॥४॥ कृष्ण भगवान् बोले कि जो स्त्री गृहकार्य में लगी हुई रजस्वलावस्था में जानके अथवा अजान

जाता रजस्वला॥दुष्टा स्पृशति भाण्डानि गृहकर्माणिसंस्थिता ॥५॥ प्राप्नोति च महापापं सत्यं सा नरकं व्रजेत्। शृणु तत्कारणं यस्माद्वर्ज्जनीया रजस्वला ॥ ६ ॥ प्रोत्सार्य्या गृहतो दूरं च्चातुर्वर्ण्येन भारत॥ ब्रह्महत्यांपुराशक्रोवृत्रंहत्वाह्यवापच ॥७॥

से भाण्डादिकों का स्पर्श करती है ॥५॥ वह इस पाप से नरकवास करती हैं रजस्वला के त्याग करने का कारण सुनो ॥६॥ चारों वर्णों की रजस्वला को गृहस्थी के कामों से अलग रहना चाहिये पहिले

हो जाता है ॥२॥ फिर युधिष्ठिर ने कहा कि हे कृष्ण वह पंचमी कौन है और ऋषिनामक क्यों

युधिष्ठिर उवाच ॥ कीदृशी पञ्चमी कृष्ण कथं च ऋषिसंज्ञिता । पातकान्मुच्यते कस्मात्तत्सर्वं कथयस्व मे ॥ ३ ॥ पापानि च बहून्यत्रविद्यन्ते किल केशव । कथं वा ऋषिपञ्चम्यां नारी कस्मात्प्रमुच्यते ॥४॥ कृष्णउवाच ॥ अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि या स्त्री

है और स्त्रियों के किस प्रकार के पापों का नाश होता है सो कहिये ॥३॥ हे केशव अनेकप्रकार

एक समय वन में युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णभगवान् से पूछा कि हे प्रभो मैंने बहुत से व्रत सुने

अथ भविष्योत्तरपुराणोक्त ऋषिपंचमीकथाप्रारम्भः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ श्रुतानि देवदेवेश व्रतानि सुबहूनि च ।
साम्प्रतं मेऽन्यदाचक्ष्व व्रतं पापप्रणाशनम् ॥ १ ॥ श्री
कृष्णउवाच ॥ अथान्यदपि राजेन्द्र पंचमीऋषिसंज्ञितम् ।
कथयिष्यामि यत्कृत्वा नारीपापात्प्रमुच्यते ॥ २ ॥

हैं अब आपसे संपूर्ण पापों का नाश करने वाला व्रत सुनने की इच्छा है सो आप कहिये॥१॥
तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजेन्द्र ऋषिपंचमी एक व्रत है जिसके करने से स्त्रियों का पाप नष्ट

से जो फल होता है सो सब इस व्रत के करनेवाली स्त्री इस संसार में धन पुत्र रूप लावण्य आदि का सुख पूर्ण भोगती है ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ और परलोक में परमगति को प्राप्त होती है

सर्वदानेषुयत्पुण्यं तदस्यव्रतचारणात् ॥ ३३ ॥ कुरुतेयाव्रतं चैतत्सानारी सुखभागिनी ॥ रूपलावण्यसंयुक्ता पुत्रपौत्रादि संयुता ॥ ३४ ॥ इहलोकेसदैवस्यात्परत्राप्यत्तमागतिः ॥ व्रतस्यास्यप्रभावेण जातिं स्मरति पौर्विकीम् ॥ ३५ ॥

इति हेमाद्रिब्रह्माण्डे ऋषिपञ्चमीकथासमाप्ता ।

और इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य को पहिले जन्म की जाति का ज्ञान भी होता है ॥ ३५ ॥

इति हेमाद्रि ऋषिपंचमी कथा समाप्ता ।

कश्यप १ अत्रि २ भरद्वाज ३ विश्वामित्र ४ गौतम ५ जमदग्नि ६ वसिष्ठ ७ ये सप्तऋषि हैं इनको अर्घ्य दे ॥ ३० ॥ मन में चिन्तना करे कि अर्घ्य ग्रहण करके मेरे ऊपर प्रसन्न होवें हे

त्रिभरद्वाजोविश्वामित्रस्तुगौतमः॥ जमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैतेऋषयः स्मृताः॥३०॥गृह्णन्त्वर्घ्यमयादत्तंतुष्टं भवेतुमेसदा॥ श्रोतव्यमिदमाख्यानंशाकाहारं प्रकल्पयेत् ॥ ३१ ॥ स्थातव्यं ब्रह्मचर्येण ऋषिध्यानपरायणः ॥ अनेनविधिनासम्यग्व्रतमेतत्समाचरेत् ॥३२॥ तस्यतज्जायतेपुण्यं सर्वतीर्थेषुयत्फलम् ॥

सुशीले ! इस कथा को सुनकर शाकाहार करै॥३१॥ ऋषियों के चरण का ध्यान करके सदाचार से रहे इस प्रकार उत्तम रीति से व्रत करै ॥३२॥ तो सम्पूर्ण तीर्थों के करने से संपूर्ण दानादिक

उसी दिन तीर्थनदी आदि में स्नान करके नियम सहित यज्ञशाला में जाकर ऋषियों का ॥२७॥

यममेवच । विधायनित्यकर्माणिगत्वा द्वारवतीमृषीन् ॥२७॥
स्नापयेद्विधिवद्भक्त्या पञ्चामृतरसैः शुभैः ॥ चन्दनाग
रुकर्पूरैर्विलिप्यच सुगन्धिभिः ॥ पूजयेद्विविधैः पुष्पगन्धधूपा
दिदीपकैः॥२८॥ समाच्छाद्यशुभैर्वस्त्रैःसोपवीतैर्यथाविधिः॥
ततो नैवेद्यसंपन्नमर्घ्यं दद्याच्छुभैः फलैः ॥ २९ ॥ कश्यपो

विधि से पूजन करैं पंचामृत से स्नान करावै चन्दन पुष्प धूप दीप आदि से अर्पन करै ॥२८॥ शुद्ध वस्त्र जनेऊ अतर आदि नैवेद्य कन्द मूल फल पक्वान्नादि अर्पण करै ॥ २९ ॥

कथा कहिये ॥ ऋषिजी बोले ॥ हे सुशीले सम्पूर्ण व्रत को चित्त लगा कर सुन ॥ २४ ॥ जिस के करने से शीघ्रही पाप से छूट कर स्त्रियाँ सौभाग्य को प्राप्त होती हैं ॥ २५ ॥ और कल्याण

तंकथयस्वमे ॥ ऋषिरुवाच ॥ सुशीले शृणुतत्सम्यग्व्रताना मुत्तमं व्रतम् ॥२४॥ येनचीर्णेन सहसा पापादस्मात्प्रमुच्य ते ॥ दुःखत्रयाद्विमुच्येत नारीसौभाग्यमाप्नुयात् ॥२५॥ कल्याणानि विवर्द्धंते संपदश्चनिरापदः ॥ नभस्येशुक्लपक्षेतु यदाभवति पंचमी ॥ २६ ॥ नद्यादिषुतदा स्नात्वाकृत्वानि

की वृद्धि धन संपत्ति की प्राप्ती होती है। भादों महीना में शुक्लपक्ष की जिस दिन पंचमी हो २६॥

इसका शरीर कीड़ों से पीड़ित हुआ है ॥ २१ ॥ हे प्रिये इसके दुःख का कारण जो था
श्रू सो मैंने तेरे से कहा । तब फिर कन्या की माता सुशीला बोली कि जिस व्रत प

१० कृमिराशिमयीधुना॥२१॥एतत्तेकथितं सर्वंकारणंदुष्कृतस्य
च ॥सुशीलोवाच ॥दर्शनादपि यस्यास्य विप्राणां निर्मलेकुले
॥२२॥जन्मयुष्मद्विधानांहि जायते ब्रह्मतेजसाम् ॥ अवज्ञया
प्रजायन्तेनिशीथेकृमिराशयः ॥ २३ ॥महाश्चर्यकरंनाथतद्व्र

के दर्शनमात्र से ब्राह्मणवंश में ॥ २२ ॥ आप सदृश तेजस्वी के यहां जन्म लिया उस व्रत का १०
निरादार करने से सोती हुई कन्या का शरीर कीड़ों से भर गया ॥ ॥ २३ ॥ उस उत्तम व्रतकी

पाप से इसके शरीर में कीड़े पड़ गये हैं ॥१८॥ रजस्वला नारी प्रथम दिन चाण्डाली दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी ॥ १९ ॥ तीसरे दिन धोबिन के समान होती है चतुर्थ दिन शुद्धि को प्राप्त होती

स्वलाया: पापेनयुक्ता भवतिसाऽनघे ॥ प्रथमेऽहनि चाण्डाली द्वितीये ब्रह्मघातिनी ॥१९॥ तृतीयेरजकी प्रोक्ता चतुर्थेऽहनि शुध्यति ॥ तदातयासखीसङ्गाद्द्रुतंदृष्टाऽवमानितम् ॥२०॥ दृष्टंव्रतप्रभावेण जाताद्विजकुलेऽमले ॥ अवमानाद्व्रतस्यास्य

है अपनी सखियों को व्रत करते देख करके भी इसको विचार एवं श्रद्धा नहीं भई ॥ २० ॥ अतः व्रताचरण देखने से इसका उत्तम ब्रह्मकुल में जन्म भया ॥ परन्तु व्रत के निरादर से

है सो कृपाकरके कहिये ॥१५॥ महर्षि ने इस वाक्य को सुनके ध्यान करके विचार किया ॥१६॥
तब मालूम भया कि पूर्वजन्मार्जित पाप है, सातवें जन्म में यह ब्राह्मणी थी ॥ १७ ॥ रजस्वला

निशीथसंप्रसुप्तेयं जायते कृमिसंकुला: ॥ एतच्छ्रुत्वाततो
वाक्यमृषिर्ध्यानपरायण: ॥१६॥ ज्ञात्वानिवेदयामास तस्या:
प्राग्जन्मचेष्टितम्॥ ऋषिरुवाच ॥ प्रागियं सप्तमेऽजनिजन्मनि
ब्राह्मण्यभूत् ॥१७॥ रजस्वला च संजाताभाण्डादीन्यस्पृश
त्तदा ॥ अस्यास्तुपापमनातेन जायतेकृमिवद्वपु: ॥१८॥ रज

धर्म के समय इसने घरका सब सामान छूने का विचार नहीं किया और संपूर्ण स्पर्श किया उसी

के पास जल्दी से गई उसको कीड़ों से ग्रस्त देखकर बड़ा विलाप
पीटती हुई मूर्छित हो गई, जब उसको होश आया तब पुत्री को उठा कर

रुदीरिताम् ॥१२॥ साभ्रान्तमनसाशीघ्रंतत्र
सातां तथाविधांदृष्ट्वाविललापसुदुःखिता ॥१३॥ उरश्चताड
यामाससुतरांमोहमापच ॥ क्षणेन चेतनां प्राप्यतामुत्थाप्य
प्रमृज्यच ॥१४॥ समालम्ब्य च बाहुभ्यामित्यतत्पितुरन्ति
कम् । स्वामिन्कथयमे साध्वीकेनदुष्कृतकर्मणा ॥ १५ ॥

पास हाथ पकड़ के लेगई और उनसे पूछा कि हे स्वामिन् किस पाप से इसकी ऐसी दशा होगई

राशि में शयन करने पर उस कन्या के सर्वांग में कीड़े पड़ गये तब वह दुःखी वस्त्रहीन एक पत्थर पर बैठी थी ॥ १० ॥ उसके पिता के शिष्य लोग उसको देखके उसकी माता के पास गये और

यत ॥ तथाविधांचतांदृष्ट्वाविवस्त्रांप्रस्तरस्थिताम् ॥ १० ॥ शिष्यानिवेदयामासुस्तन्मातुःकरुणान्विताः ॥ नजानीमाव यंकिंचिद्देविसाध्वीं तथाविधाम् ॥११॥ कृमिराशिमयीजाता मातः सम्प्रति दृश्यते ॥ वज्रपातछदृशं वाक्यं श्रुत्वाशिष्यै

बड़ी करुणा से कहने लगे कि हे माता किस कारण साध्वी की ऐसी दशा होगई ॥११॥ इसका सर्वांग कीड़ों का ढेर होगया है। इनके ऐसे दुःखदाई वचनों को सुनके माता विकल होकर कन्या

से कर दिया था भाग्यवश वह कन्या वैधव्य को प्राप्त भई । तब वह कन्या अपने पिता के यहां

विवाहितवैसा दैवाद्वैधव्यं प्राप सत्तम ॥ ६ ॥ सतीत्वंपाल
यन्तीसाऽऽस्ते निजपितुर्गृहे ॥ तस्यादुःखेनसंतप्तः सुतंसं
स्थाप्य वेश्मनि ॥७॥ गंगातीरवनं प्राप्तो सकलत्रस्तयासह ॥
सतत्राध्यापयामास शिष्यान्वेदं द्विजोत्तमः ॥ ८ ॥ सुताच
कुरुते तस्य पितुः शुश्रूषणं परम् ॥ पितुः शुश्रूषणं कृत्वापरि
श्रान्ताकदाचन ॥ ९ ॥ निशीथेकिलसंसुप्ताक्रमिराशिरजा

रह कर धर्म । नवह करने लगी । पिता की सेवा गृहस्थी का काम करके थक कर एक समय ॥

से नरदेही नरक को कदापि नहीं प्राप्त होती है, इसकी एक प्राचीन कथा है सो भी कहते हैं ॥३॥ विदर्भ देशवासी उत्तंक नामक एक ब्राह्मण सर्वगुण संपन्न था, उसकी स्त्री सुशीला नाम से विख्यात

तिहासं पुरातनम् ॥३॥ वैदर्भेचाद्विजवर उत्तंकोनामनामतः॥ तस्यभार्यासुशीलेतिपतिव्रतपरायणा ॥ ४ ॥ तस्याश्चपत्य युगलं पुत्रोहिसुविभूषणः ॥ अधीतवान्सुतस्तस्य वेदान्साङ्ग पदक्रमान् ॥ ५ ॥ समानेच कुलेतेन सुताचापि विवाहिता ॥

बड़ी पतिव्रता थी ॥४॥ उसको दो सन्तति थी, एक पुत्र सुविभूषण नाम का था जो वेदशास्त्र पढ़ता था और एक कन्या थी जिसका विवाह उत्तंक ने एक उत्तम कुल के विद्वान् ब्राह्मण के सुन्दर कुमार

अथ कथाप्रारंभः ॥ सिताश्व नामक राजा ने ब्रह्माजी से कहा कि हे ब्रह्मन् मैंने अनेक व्रतमाहात्म्य सुना है अब श्रीमुख से सब प्रकार के पापों का नाश करनेवाला व्रतमाहात्म्य सुनने

अथ कथाप्रारम्भः ॥ सिताश्वउवाच ॥ श्रुतानिदेवदेवेश व्रतानि सुबहूनिच । साम्प्रतंमे समाचक्ष्वव्रतंपापप्रणाशनम् ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामि व्रतानामुत्तमम् व्रतम् ॥ ऋषिपञ्चमीति विख्यातं सर्वपापहरं परम् ॥ २ ॥ येनचीर्णेनराजेन्द्रनरकं नैव पश्यति॥ अत्रैवोदाहरन्तीममि-

की इच्छा है ॥ १ ॥ ब्रह्मा ने कहा कि हे राजन् व्रतों में श्रेष्ठ पापों का नाश करनेवाला सप्तर्षि ऋषिपंचमी का व्रत है सो तुम्हारे स्नेह से कहते हैं सुनो ॥ २ ॥ हे राजेश्वर ऋषिपंचमी व्रत करने

से दक्षिणा चढ़ाना । यानि से (प्रदक्षिणा) फेरा करना ॥ नमोस्तु० मंत्र से नमस्कार करना एतेसप्तर्प० से प्रार्थना करना । वायनदानका सङ्कल्प कर आवाहनकरे और ऋग्यजुः मन्त्रसे ब्राह्मण

६

वायनदानविधिः॥ न्यूनातिरिक्तकर्माणिमयायानिकृतानिच। क्षमध्वंतानिसर्वाणियूयंसर्वेतपोधनाः ॥ यान्तुदेवगणाःसर्वेपूजामादायमामकीम् ॥ इष्टकामासमृध्यर्थं॥ पुनरागमनायच॥ एवंसंपूज्यविधिना भक्तियुक्तेनचेतसा॥ तेषामग्रेच श्रोतव्यं शुभंचैवकथानकम् ॥ इति पूजा विधिः ॥

पूजन करै । फल घृत पक्वान्न दक्षिणा समेत वायन ब्राह्मण को दे लिखे मंत्रों से प्रार्थना करै। फिर कथा सुनके कर्पूर आर्ति करके यान्तुदेव० मंत्र से विसर्जन करदे ॥ इति पूजाविधिः ॥

फिर ३ आचमनी जल गिरावना । आचमन और पान करने के बाद हाथ धोने को जलदे नमो

एतेसप्तर्षय: सर्वैंभक्त्यासंपूजितामया॥ सर्वंपापंव्यपोहन्तुज्ञानतोऽज्ञानत:कृतम् ॥ प्रार्थयेत्॥ अथवायनम् ॥ कृतायाः पूजायाः सांगतासिध्यर्थंब्राह्मणाय वायनंदातु० ॥ तथा ब्राह्मणपूजनं करिष्ये॥ वायनंफलसंयुक्तं सघृतंदक्षिणान्वितम् ॥ द्विजवर्यायदास्यामिव्रतसंपूर्तिहेतवे॥ भवन्त:प्रतिगृह्णन्तुज्योतिरूपास्तेपाधना:॥ उभयोस्तारका:सन्तुवायनस्यप्रदानत: ॥ इति

वेद० मंत्र से फल समर्पण करना । पूगीफल० मंत्र से पान सुपारी चढ़ाना ॥ हिरण्यगर्भ० इस मंत्र

शुभ्राक्षताक्ष० मंत्र से अक्षत चढावै ॥ मालती चंपकादि० मंत्रसे फूल चढावे॥ वनस्पति० मंत्र पं०

श्रु० व्यंनागवल्लीदलैर्युतम्॥ कर्पूरेणसमायुक्तं ताम्बूलंप्रतिगृह्यता

५ म् ताम्बूलंस०॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजंविभावसोः॥ अन

न्तपुण्यफलदमतः शान्तिंप्रयच्छमे॥ दक्षिणांस०॥ यानिका

निचपापानिब्रह्महत्यासमानिच। तानिसर्वाणिनश्यंति प्रदक्षि

णापदेपदे॥ प्रदक्षिणांस०॥ नमोस्तुऋषिवृन्देभ्योदेवर्षिभ्योन

मोनमः॥सर्वपापहरेभ्योहिवेदाविद्भ्योनमोनमः॥ नमस्कारः॥ ५

से धूपार्ति करना॥ साज्यं च० मंत्र से दीपार्ति करना। नाना पक्वान्न०मंत्र से नैवेद्य लगावना।

इससे पंचामृतस्नान करावे। मन्दाकिनि० मंत्र से जल से स्नान करावै॥ सर्वे नित्यं० मंत्र से

जितंमया॥ दीपंगृहाणदेवेशत्रैलोक्यतिमिरापहम्॥ दीपम्॥
नानापक्वान्नसंयुक्तंरसैःषड्भिःसमन्वितम्॥ गृह्णन्तुऋषयः
सर्वेमयानैवेद्यमर्पितम्॥ नैवेद्यंसमर्पयामि॥ मध्येपानीयम्
स०॥उत्तरापोषणस०॥ हस्तप्रक्षालनं०॥करोद्वर्तनार्थेचन्दनं
स०॥नमो वेदविदःश्रेष्ठाऋषयःसूर्यसन्निभाः॥गृह्णन्त्विदंफलं
तुष्टामयादत्तं हि भक्तितः॥ फलंसमर्पयामि॥ पूगीफलंमहद्दि

वस्त्र चढ़ावै॥ नाना मन्त्रः० इस मंत्र से यज्ञोपवीत चढ़ावै॥ कुंकुमागुरु० मंत्र से चन्दन चढ़ावै॥

ऋगयजुः मन्त्र से आसन दे । गन्धपुष्पाक्षतैं० मंत्र से पाद्यार्घ चढ़ावै ॥ नमस्ये शुक्ल०

चंदनंदिव्यंगृह्णन्तु ऋषिसत्तमाः॥ गन्धम् ॥शुभ्राक्षताश्च सं

पूर्णाःप्रक्षाल्यचानियोजिताः॥ शोभायैवोमयादत्ता गृह्णन्तां

मुनिसत्तमाः॥ अक्षताः॥ मालतीचंपकादीनि तुलस्यादीनिवै

द्विजाः॥मयाहृतानिपुष्पाणिपूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ पुष्पाणि।

वनस्पतिरसोद्भूतोगन्धाढ्यःसुमनोहरः॥आघ्रेयः सर्वदेवानां

धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥धूपम् ॥ साज्यंचवर्तिसंयुक्तंवह्निनांयो

इससे गन्धादिसहित जल अर्घ्य चढ़ावै । लोकानां० इस मंत्र से आचमन करावे । पयोदधि०

करै कराड़ा सूर्य के समान तेजस्वी जटावल्कल धारण किये भस्म लगाये कुशा कमण्डल हाथ में लिये

सत्तमाः ॥ पंचामृतम् ॥ मन्दाकिनी गोमती च यमुना च सरस्वती। कृष्णा च नर्मदा तापी ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम् ॥ स्नानम् ॥ सर्वेनित्यंतपोनिष्ठा ब्रह्मज्ञाः सत्यवादिनः ॥ वस्त्राणि प्रतिगृह्णन्तु मुक्तिदाः सन्तु मे सदा ॥ वस्त्राणि ॥ नानामन्त्रैः समुद्भुतंत्रिवृत्तं ब्रह्मसूत्रकम् ॥ प्रत्येकं च प्रयच्छामि ऋषयः प्रतिगृह्यताम् ॥ उपवीतानि ॥ कुंकुमागुरुकर्पूरसुगन्धैर्मिश्रितं शुभम् ॥ गंधाढ्यं

अरुन्धती परम सती सत्यवती सहित ऋषिवृन्द का चिन्तन करै आगच्छन्तु० इस मंत्र सेआवाहन करके

पात्र को कलश पर रखके कुश के सप्त ऋषि और अरुन्धती जी की स्थापना करना फिर संकल्प

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तंपाद्यं गृह्णन्तु भो द्विजाः ॥ प्रसादं कुरुत प्रीता
स्तुष्टाः सन्तु सदा मम ॥ इ० पाद्यम् ॥ नभस्येशुक्लपंचम्यां अ
र्चिताऋषिसत्तमाः॥ दहन्तुपापंसर्वं मेगृह्णन्त्वर्घ्यं नमोनमः॥
इ० अर्घ्यम् ॥ लोकानांतुष्टिकर्तारो यूयंसर्वेतपोधनाः॥ नमोवो
धर्मविज्ञेभ्यो महर्षिभ्योनमोनमः॥इ० आचमनम्। पयोदधि
घृतंचैव शर्करामधुसंयुतम् ॥ पंचामृतेन स्नपनं करिष्ये ऋषि

करके विधिवत् पूजन आवाहन करै ॥ अथ पूजाविधिः ॥ हाथ में फूल लेकर ऋषियों का ध्यान

अबीर से अष्टदल बनाय के जलपूरित तामे के कलश में केसर पंचरत्न पंचपल्लव छोड़ के वस्त्र

न्धतीसहितकश्यपादिसप्तर्षिप्रीत्यर्थं सप्तर्षिपूजनमहमाच
रिष्ये ॥ मूर्तंब्रह्मण्यदेवस्य ब्रह्मणस्तेज उत्तमम् । सूर्यकोटिप्र
तीकाशं ऋषिबृन्दं विचिन्तये ॥ इतिध्यानम् ॥ आगच्छन्तुम
हाभागाश्चतुर्वेदपरायणाः । यावद्व्रतमिदंकुर्वे कृपया भवताम
हम् ॥ इत्यावाहनम् ॥ ऋग्यजुः सामेवदानां स्वरूपेभ्यो नमो
नमः॥पुराणपुरुषेभ्योहि देवर्षिभ्योनमोनमः॥इत्यासनदानम्॥

कलश के गले में लपेट कर ऊपर १ चौड़ी रिकाबी में श्वेत वस्त्र बिछाय के अष्टदल बनाना उस

अथ ऋषिपंचमी

भाषा टीका सहितः ।